PHILOSOPHY

M.A., Paper VII (Sem.-II)

Ends and Means (साध्य और साधन)
(साध्य-साधन संबंध)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

→ गाँधीजी साधन की पवित्रता पर जोर देते हैं। उनके अनुसार साध्य का औचित्य साधन के औचित्य से निर्धारित होता है।

→ साध्य की तुलना में साधन पर उनका जोर गीता के 'निष्काम कर्म' के सिद्धांत पर आधारित है जिसके अनुसार एक व्यक्ति का नियंत्रण क्रियाओं (कर्मों) पर होता है, उसके फलों पर नहीं।

→ साधन ही अन्ततः सब कुछ है। साधन का चर्मोत्कर्ष स्वयं साध्य है। इस प्रकार साध्य वृद्धि होकर साधन द्वारा स्वयं अनुभव किया जाता है। साध्य कभी अचानक साधन से बाहर का परिणाम नहीं हो सकता।

→ साधन साध्य को नेतृत्व करने के अतिरिक्त साध्य को आकार भी देता है। गाँधीवादी दर्शन में आत्म-अनुभूति की आध्यात्मिक स्वतंत्रता सभी मानवीय क्रियाओं का साध्य है।

→ गाँधीजी प्रकृति की उपमा देते हुये कहते हैं कि साधन और साध्य का सम्बन्ध बीज और वृक्ष का सम्बन्ध है। इन दोनों में अखण्ड एक-सूत्रता है।

जिस प्रकार किसी जंगली पौधे का बीज बोकर गुलाब प्राप्त नहीं किया जा सकता उसी प्रकार बुरे साधनों से अच्छा साध्य प्राप्त नहीं हो सकता। हम जैसा बोते हैं वैसा ही काटते हैं। अपने साधन के अनुरूप ही हम अपना लक्ष्य साध सकते हैं।

→ अपवित्र साधन सदैव ही साध्य को अपवित्र करता है। असत्य से हम सत्य तक नहीं पहुँच सकते, हिंसा से अहिंसा की सिद्धि नहीं हो सकती। सत्य और अहिंसा यदि हमारे साध्य हैं तो उन्हें प्राप्त करने के लिये साधन भी सच्चे और अहिंसात्मक होने चाहिये।

Scanned with CamScanner

→ वैज्ञानिक रूप से ~~प्रत्~~ प्रत्येक कार्य का एक उपयुक्त परिणाम होता है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक कार्य अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये किया जाता है और वह लक्ष्य उन कार्यों की श्रृंखला का परिणाम मात्र है जिन्हें माध्यम (साधन) के रूप में अपनाया जाता है।

→ ~~यह प्रश्न यह कह सकते~~ यह कहना असंगत न होगा कि हम केवल ~~सत्य और अहिंसा से ही~~ सत्य और अहिंसा से ही सत्य और अहिंसा तक पहुँच सकते हैं। अतः गाँधी दर्शन में साध्य अपने साधन से स्वतंत्र न होकर माध्यम-प्रक्रिया (साधन-प्रक्रिया) का ही अन्तिम परिणाम है।

→ इस प्रकार गाँधी दर्शन में 'साध्य-साधन' संबंध की पवित्रता को किसी भी कार्य के नैतिक औचित्य एवं अनौचित्य का मानदण्ड माना जाता है। गाँधी के अनुसार केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है कि हमारे साध्य नैतिक हो, बल्कि उतना ही आवश्यक यह भी है कि हमारे साधन भी विशुद्ध हो। ~~साधनों~~ साधन की अनैतिकता निश्चित रूप से साध्य की नैतिकता को नष्ट कर देती है।

→ गाँधी ~~साध्य और साधन~~ में साधन और साध्य में बीज एवं वृक्ष के संबंध की भाँति ~~अनिवार्य~~ अटूट संबंध मानते हैं। अपनी इसी अवधारणा के कारण वे फासिस्ट एवं साम्यवादी की इस अवधारणा कि 'The end justified the means' है, को ठुकरा देते हैं।

→ गाँधी का साधन-साध्य सिद्धांत जॉन डिवी के नजदीक है क्योंकि वह भी मानता है कि 'साधन से साध्य तक एकरूपता है। साध्य की प्राप्ति के लिये साधनों की उपेक्षा करना ~~डीवी~~ डिवी मूर्खतापूर्ण मानता है। किन्तु गाँधी और डिवी के विचारों में मौलिक अन्तर ~~भी~~ है → जहाँ डिवी के अनुसार ~~[illegible]~~ नैतिक लक्ष्य निश्चित और निर्धारित नहीं है, वे एक के बजाय अनेक हो सकते हैं और इसलिये हमें साधनों की अभिन्नता नहीं करनी चाहिये, जबकि गाँधी के अनुसार नैतिक लक्ष्य निश्चित और निर्धारित है, वह एक है अनेक नहीं। वह लक्ष्य सत्य उस साधन अहिंसा को आत्मसात करता है जो मनुष्य का सारतत्व है, जिसे हम <u>अहिंसक बनकर</u> ही प्राप्त कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner